वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग
किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रेस विज्ञप्ति
(19 अगस्त, 2017)

19 अगस्त, 2017 लखनऊ। वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ के द्वारा अपना बारहवां स्थापना दिवस समारोह विभाग के आडिटोरियम में आयोजित किया गया।

स्थापना दिवस समारोह का प्रारम्भ अतिथियों के पुष्पगुच्छ से स्वागत एवं सरस्वती वन्दना से किया गया। इसके पश्चात् समारोह की मुख्य अतिथि डा0 सौम्या स्वामीनाथन, सचिव भारत सरकार, डिपार्टमेण्ट आफ हेल्थ रिसर्च एवं निदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई0सी0एम0आर0), नई दिल्ली तथा सम्मानित अतिथि गण, डा0 आशु ग्रोवर, साइंटिस्ट ''ई'' एवं डा0 रविन्दर सिंह, साइंटिस्ट ''सी'', आई0सी0एम0आर0, ने दीप प्रज्जवलित किया। इस अवसर पर, प्रो0 (डा0) एम0एल0बी0 भट्ट, माननीय कुलपति, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रो0 (डा0) विनीता दास, डीन, फैकल्टी आफ मेडिसिन, प्रो0 (डा0) शादाब मोहम्मद, डीन, फैकल्टी आफ डेन्टल सांइसेज, प्रो0 (डा0) एस0एन0 शंखवार, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, डा0 ए0 के0 अग्रवाल एवं डा0 प्रभात सिठोले, भूतपूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मनोचिकित्सा विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

डा0 श्रीकान्त श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर, वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ ने इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य अतिथियों का स्वागत सम्बोधन किया।

डा0 एस0 सी0 तिवारी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ ने विभाग की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया। डा0 तिवारी ने वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग की स्थापना के विषय में एक संक्षिप्त विवरण दिया तथा उन लोगों को याद किया जिन्होने विभाग की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होनें विभाग द्वारा मानसिक रोगो से ग्रस्त वृद्धजनों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में एक विस्तृत ब्यौरा दिया। उन्होनें बताया कि 1 अगस्त, 2016 से 31 जुलाई, 2017 तक कुल 10,206 रोगियों को आउटडोर सेवा, 423 रोगियों को भर्ती की सुविधा, 70 रोगियों को ई0ई0जी0, 34 रोगियों को ई0सी0जी0, 106 रोगियों को गैर–औषधीय उपचार एवं प्रबन्धन की सेवा, 110 रोगियों को मनोचिकित्सा, 732 रोगियों को मनोसामाजिक उपचार, 40 रोगियों को बी0पी0एल0/विपन्न सुविधा, 1193 रोगियो को फिजियोथेरेपी, 1149 रोगियों को आक्यूपेशनल थेरेपी एवं 967 वृद्ध रोगियों को खान–पान संबंधी सलाह दी गयी। उन्होनें इस बात पर बल दिया कि विभाग ''वृद्धजन हितायः – वृद्धजन सुखायः'' के सिद्वान्त पर कार्य करता है। उन्होनें उल्लेख किया कि विभाग अपने आठ संकाय सदस्यों तथा समस्त सहयोगी

कर्मियों के साथ दिन प्रतिदिन अपनी शैक्षिक, नैदानिक एवं शोध गतिविधियों में उत्तरोत्तर सुधार लाने में प्रयासरत् है।

डा0 तिवारी ने विभाग में संचालित विभिन्न शोध गतिविधियों से संबंधित उपलब्धियों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होनें बताया कि आन्तरिक (In-House) शोध गतिविधियों को संचालित करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक ''सेण्ट्रल फैसिलिटी सेण्टर फॉर एडवान्स रिसर्च, ट्रेनिंग एवं सर्विसेज (कार्ट्स) इन जिरियाट्रिक एण्ड मेण्टल हेल्थ'' की स्थापना की गई थी। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई0सी0एम0आर0), नई दिल्ली द्वारा ''सेण्टर फॉर एडवान्स रिसर्च (कार) इन एजिंग एण्ड जिरियाट्रिक मेण्टल हेल्थ'' की स्थापना की जा रही है। इस केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य वृद्धावस्था में होने वाली मानसिक बीमारियों के संबंध में उच्च स्तर के शोध को गति प्रदान करना है। उन्होंने बताया कि कार्ट्स के अन्तर्गत संचालित प्रथम शोध अध्ययन ''लखनऊ एल्डरली स्टडी'' इन एजिंग एण्ड जिरियाट्रिक मेण्टल हेल्थ में लखनऊ के ग्रामीण क्षेत्र से अबतक कुल 3708 व्यक्तियों एवं शहरी क्षेत्र से 963 व्यक्तियों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है। इनमें से ग्रामीण क्षेत्र से कुल 589 एवं शहरी क्षेत्र से 224 ऐसे व्यक्तियों को अध्ययन में शामिल किया गया है जिनकी उम्र 45 वर्ष या उससे अधिक है। उक्त ग्रामीण क्षेत्र के कुल जनसंख्या में 45 वर्ष या इससे अधिक उम्र के कुल व्यक्तियों का अनुपात 20.1 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 23.36 प्रतिशत है।

डा0 तिवारी ने पुनः बताया कि काट्र्स द्वारा वित्तपोषित शोध अध्ययनों के अतिरिक्त, वर्तमान में 1 एक्स्ट्राम्यूरल शोध परियोजना समाप्त की जा चुकी है, 1 चल रही है एवं 6 शोध परियोजना, आई0सी0एम0आर0–कार द्वारा वित्त पोषित होने के लिए प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त 3 इन्ट्राम्यूरल शोध परियोजना भी विभाग में चल रही है।

इस अवसर पर प्रो0 (डा0) विनीता दास, डीन, फैकल्टी आफ मेडिसिन, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ के द्वारा स्मारिका ''वृद्धोत्थान'' का विमोचन किया गया, तत्पश्चात् प्रो0 (डा0) एस0एन0 शंखवार, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक के द्वारा वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग के उत्कृष्ठ कर्मियों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले कर्मियों में डा0 ईशा शर्मा (फेलो सीनियर रेजीडेण्ट), डा0 आकांक्षा सोनल (पी.जी. सीनियर रेजीडेण्ट), श्रीमती बेट्सी मेहरोत्रा (आध्यात्मिक परामर्शदाता), डा0 अमलेन्द्र कुमार (शोध सहायक), कु0 तनुश्री शुक्ला (स्टैटिशयन),, श्री रवि गौतम (फार्मासिस्ट), श्री षलैन्द्र मिश्रा(ई0सी0जी0 टेक्नीशियन), श्रीमती मन्जूषा (स्टाफ नर्स), श्री अशोक पाण्डेय (वरिष्ठ सहायक) श्री विनोद (परिचालक), श्री आलोक कुमार (समाजशास्त्री), श्री अरविन्द (वार्ड ब्वाय), श्री सोनू (माली), श्रीमती मीरा (वार्ड आया), श्री विकास (स्वीपर) एवं कु0 उपमा शुक्ला (केयर गिवर) थे।

माननीय कुलपति, प्रोफेसर (डा0) एम0एल0बी0 भट्ट ने अपने उत्साहवर्धक सम्बोधन से विभाग की टीम को प्ररित किया तथा आने वाले वर्षो मे विभाग के उत्तरोत्तर विकास के लिए आर्शीवाद प्रदान किया।

समारोह की मुख्य अतिथि डा0 सौम्या स्वामीनाथन, सचिव भारत सरकार, डिपार्टमेण्ट आफ हेल्थ रिसर्च एवं निदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई0सी0एम0आर0), नई दिल्ली ने जीरियाट्रिक मेण्टल हेल्थ को एक विषय के रूप में देश में प्रारम्भ करने संबंधी पहल के लिए वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग के टीम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान परिवेश में इस विभाग की नितांत आवश्यकता है। उन्होनें बताया कि एक सुपर स्पेशलाइज्ड चिकित्सकीय विषय के रूप में वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य को इस तरह विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि वृद्ध जनों को सम्मान जनक

जीवन प्रदान करने के रास्ते में आने वाली नैदानिक, शैक्षिक एवं सेवा संबंधी चुनौतियों से निपटा जा सके।

सम्मानित अतिथि एवं स्थापना दिवस व्याख्याता डा0 रविन्दर सिंह ने ''Widening Horizons: Adding Quality'' विषय पर अपने व्याख्यान में बताया कि वृद्धजनों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में लिंग, शिक्षा, गरीबी, आर्थिक सुरक्षा/संसाधन इत्यादि कारक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। इन कारको के मध्य असंतुलन होने की वजह से जीवन में समस्यायें आ सकती है। इन जोखिम कारको के मध्य संतुलन बैठाना, सेवा प्रदाताओं के लिए एक चुनौती है। इसके लिए एक बहु–आयामी रणनीति की आवश्यकता है। वृद्धजनों के देखभाल के लिए क्लीनिकल क्षेत्र में, औषधीय अथवा शल्य चिकित्सकीय सेवाओं/निपुणताओं को अपनाने/संशोधित करने की आवश्यकता है। वेब, फोन, स्कूल, कालेज अथवा क्लब के द्वारा सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से वृद्धजनों के मनोदशा को प्रोत्साहित किया जा सकता है। नवीन विचारों के द्वारा वृद्धों को आर्थिक रूप से सशक्त किया जा सकता है। दूर संचार स्वास्थ्य सेवा (टेलीफोन, विडियो कान्फ्रेंसिग, विडियो फोन, वेब आधारित) के द्वारा हम वृद्धजनों को शिक्षा, परामर्श, मनोवैज्ञानिक थिरेपी, समाजिक सहायता, आंकड़ा संग्रह एवं/अथवा क्लीनिकल केयर प्रदान कर सकते है।

डा0 आशु ग्रोवर एवं डा0 रविन्दर सिंह ने अपरान्ह मे ''अनुसंधान पद्धति'' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में उन्होनें विस्तार से चर्चा की किस तरह एक अच्छी रिसर्च पद्धति के साथ एक वैज्ञानिक शोध प्रस्ताव लिखा जाता है। उन्होनें जैव–चिकित्सकीय अनुसंधान के इन्टरवेंशनल पद्धति के बारे में भी बताया।

डा0 शैलेन्द्र मोहन त्रिपाठी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वृद्धावस्था मानसिक स्वास्थ्य विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ ने समारोह के अन्त में आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

****